पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.11.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

बुधवार, 23 दिसम्बर 2015

प्रातः 10 से दोपहर 1.30 तक

हिन्दी भवन, आई. टी. ओ. नई दिल्ली

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक

डा.अनिल आर्य,अध्यक्ष

महेन्द्र भाई,महामंत्री

वर्ष-32 अंक-11 मार्गशीर्ष-2072 दयानन्दाब्द 191 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.11.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द का 132 वां बलिदान दिवस सम्पन्न

भव्य संगीत संध्या में झूमे आर्य जन : स्वामी दिव्यानन्द अमृत महोत्सव स्मारिका का विमोचन

श्री प्रदीप तायल का शाल व शील्ड से अभिनन्दन करते सुदेश भसीन (पूर्व पार्षद), डा. अनिल आर्य, स्वामी दिव्यानन्द जी, महेन्द्र भाई व सुरेश आर्य। द्वितीय चित्र–ठाकुर विक्रम सिंह जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, दुर्गेश आर्य, स्वामी दिव्यानन्द जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री।

वीरवार, 12 नवम्बर 2015, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 132 वां बलिदान दिवस दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली के खुले थियेटर में सोल्लास मनाया गया, भारत विकास परिषद् पीतम पुरा शाखा का कार्यकम को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। समारोह की अध्यक्षता समाज सेवी श्री प्रदीप तायल (पाईटैक्स ज्वैलर्स) ने की। समारोह का शुभारम्भ 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ हुआ, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया। श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन', अर्चना मोहन व युवा गायक अंकित उपाध्याय के मधुर भजनों पर लोग मंत्र मुग्ध हो गये। स्वामी दिव्यानन्द जी के 75 वें जन्मोत्सव पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन ठाकुर विक्रम सिंह जी ने किया।

समारोह के पश्चात लगभग एक हजार लोगों ने ऋषि लंगर का आनन्द लिया। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व महामन्त्री महेन्द्र भाई, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य,देवेन्द्र भगत, अरूण आर्य, सौरभ गुप्ता, माधवसिंह, प्रदीप आर्य, वरूण आर्य, विमल आर्य, राकेश आर्य, अमित आर्य, गम्भीर सोंलकी, अनुज आर्य, शिवम मिश्रा आदि ने सुन्दर व्यवस्था सम्भाली।

भाजपा दिल्ली प्रदेश महामन्त्री रेखा गुप्ता (पार्षद) व पार्षद ममता नागपाल का अभिनन्दन करते प्रवीन आर्या, श्रीमती शोभा तायल व उर्मिला आर्या।

दिल्ली हाट पीतमपुरा के ओपन थियेटर में उमड़ा दयानन्द प्रेमियों का जन सैलाब। उत्साह व जोश का नाम है ''आर्य युवक परिषद्''। जहां कभी विश्राम नहीं होता।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा की

प्रान्तीय बैठक 25 नवम्बर को करनाल में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा की प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक बुधवार, 25 नवम्बर 2015 को प्रातः 11.30 बजे आर्य समाज, सैक्टर–13, करनाल में श्री सत्येन्द्र मोहन कुमार की अध्यक्षता में होगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य, चौ. लाजपतराय आर्य, श्री शांतिप्रकाश आर्य, श्री मनोहर लाल चावला आदि अपना मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। सभी साथी समय पर पंहुचे।

–स्वतन्त्र कुकरेजा ,प्रान्तीय अध्यक्ष **–वीरेन्द्र योगाचार्य, प्रान्तीय महामन्त्री**

'देश की आजादी को समर्पित आदर्श जीवनः मृत्युंजय भाई परमानन्द'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में भाई परमानन्द जी का त्याग, बलिदान व योगदान अविस्मरणीय है। लाहौर षड्यन्त्र केस में आपको फांसी की सजा दी गई थी। आर्यसमाज के अन्तर्गत आपने विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। इतिहास के आप प्रोफैसर रहे एवं भारत, यूरोप, महाराष्ट्र तथा पंजाब के इतिहास लिखे जिन्हें सरकार ने राजद्रोह की प्रेरणा देने वाली पुस्तकें माना। देशभक्ति के लिए आपको मृत्युदण्ड की सजा सुनाई गई जो बाद में कालापानी की सजा में बदल दी गई। श्री एण्ड्रयूज एवं गांधी जी के प्रयासों से आप कालापानी अर्थात् सेलुलर जेल, पोर्ट ब्लेयर से रिहा हुए और सन् 1947 में देश विभाजन से आहत होकर संसार छोड़ गये। भारत माता के इस वीर पुत्र का जन्म पश्चिमी पंजाब के जेहलम जिले के करयाला ग्राम में 4 नवम्बर 1876 को मोहयाल कुल में भाई ताराचन्द्र जी के यहां हुआ था। महर्षि दयानन्द जी के बाद वैदिक धर्म के प्रथम शहीद पं. लेखराम, स्वतन्त्रता सेनानी खुशीराम जी जो 7 गोलियां खाकर शहीद हुए तथा लार्ड हार्डिंग बम केस के हुतात्मा भाई बालमुकन्द जी की जन्म भूमि भी पश्चिमी पंजाब, वर्तमान पाकिस्तान की यही झेलम नगरी थी। भाई बालमुकन्द और भाई परमानन्द जी के परदादा सगे भाई थे। भाई मतिदास भी भाई परमानन्द के पूर्वज थे जिन्हें मुस्लिम क्रूर शासक औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक में आरे से चिरवाया था। उनके वंशजों को भाई की उपाधि सिक्खों के गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने देते हुए कहा था कि दिल्ली में हमारे पूर्वजों का खून मतिदास जी के खून के साथ मिलकर बहा है इसलिए आप हमारे भाई हैं।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सन् 1877 में पंजाब में वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार किया था। उनके भक्त अमीचन्द की पंक्तियां – 'दयानन्द देश हितकारी, तेरी हिम्मत पे बलिहारी' पंजाब के गांव–गांव में गूंज रही थी। ऐसे वातावरण में आप बड़े हुए। प्राइमरी तक की भाई परमानन्द की शिक्षा करयाला गांव में हुई। इसके बाद चकवाल के स्कूल में आपका अध्ययन हुआ। कुशाग्र बुद्धि भाई परमानन्द यहां अपने शिक्षकों के प्रिय छात्र बनकर रहे। लगभग 14 वर्ष की आयु में आपकी माता मथुरादेवी जी का देहान्त हो गया। पौराणिक पण्डित के अन्धविश्वासपूर्ण कर्मकाण्ड को देख व अनुभव कर आपने पौराणिकता छोड़ कर आर्यसमाज को अपनाया। प्रसिद्ध दयानन्दभक्त गीतकार अमीचन्द तथा रक्तसाक्षी पं. लेखराम जी पश्चिमी पंजाब में आपके निकटवर्ती थे। इन दोनों आर्य प्रचारकों का आप पर विशेष प्रभाव था। चकवाल में आपने आर्यसमाज की स्थापना भी की।

सन् 1891 में आप लाहौर आये तथा सन् 1901 में एम.ए. करके आपने मैडिकल कालेज में प्रवेश लेकर चिकित्सक बनने का विचार किया। दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक स्कूल व कालेज के मुख्य संस्थापक महात्मा हंसराज की प्रेरणा से आपने अपना यह विचार बदल कर दयानन्द कालेज, लाहौर का प्राध्यापक का पद ग्रहण कर लिया। इस कालेज का आजीवन सदस्य बनकर आपने 75 रुपये मासिक के नाममात्र के वेतन पर अपनी सेवायें डी.ए.वी. कालेज को प्रदान की जबकि आपको अन्यत्र कार्य करके अधिक वेतन मिल सकता था। युवावस्था में तपस्या का कठोर व्रत लेकर आपने जीवन भर उसका पालन किया। राजनीति में प्रवृत्त नेतागण हिन्दुओं के उचित हितों की बात करने वाले को साम्प्रदायिक मानते हैं। ऐसे लोगों से आपकी तालमेल नहीं बैठी। उचित अनुचित बातों को आप यथातथ्य प्रकट करते थे। हिन्दू हितों के विरोधियों को आप कहा करते थे––''अमर हमदर्दी ए निशानी कुफ्र की ठहरी। मेरा इमान लेता जा, मुझे सब कुफ्र देता जा।"

आपका निवास लाहौर में भारत माता मन्दिर की तीसरी मंजिल पर था। सरकार को आपकी गतिविधियों पर शुरू से ही शक था। इस कारण पुलिस ने एक बार आपके निवास की तलाशी ली। आपके सन्दूक से शहीद भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह द्वारा लिखी हुई स्वतन्त्र भारत के संविधान की प्रति तथा बम बनाने के फार्मूले का विवरण बरामद हुआ। इस कारण आपको बन्दी बना लिया गया। श्री रघुनाथ सहायक जी वकील के प्रयास से आप 15 हजार रुपये की जमानत पर रिहा हुए। अभियोग में आप पर देश–विदेश में विदेशी शासन के विरुद्ध प्रचार का आरोप लगाया गया था। 22 फरवरी 1915 को लाहौर षड्यन्त्र केस में आप पुनः बन्दी बनाये गये थे। 30 सितम्बर, 1915 को विशेष ट्रिब्यूनल ने आपको फांसी का दण्ड सुनाया। आपकी पत्नी माता भाग सुधि, श्री रघुनाथ सहाय वकील तथा महामना मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से 15 नवम्बर 1915 को फांसी का दण्ड दिये गये 24 में 17 अभियुक्तों की सजा को आजीवन कालापानी की सजा में बदल दिया गया। कालापानी में आपको अनेक यातनाओं से त्रस्त होना पड़ा। आपने यहां जेल में आमरण अनशन किया। लम्बी भूख हड़ताल से आप मृत्यु की सी स्थिति में पहुंच गये। सुहृद मित्रों के आग्रह पर आपने भोजन ग्रहण कर अनशन समाप्त कर दिया। बाद में श्री ऐण्ड्रयूज एवं गांधी जी के प्रयासो से आप कालापानी से रिहा किए गये।

सन् 1901 में आपने एम.ए. किया था। उन दिनों देश में एम.ए. शिक्षित युवकों की संख्या उंग्लियों पर गिनी जा सकती थी। इस पर भी सादगी एवं मितव्ययता आपके जीवन में अनूठी थी। सन् 1931 में आपने आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली की स्थापना की थी। एक बार जब आप इस समाज में आमन्त्रित किए गये और आपके मित्र श्री पन्नालाल आर्य रेलवे स्टेशन से आपको तांगे में समाज मन्दिर लाना चाहते थे तो आपने पैदल चलने की इच्छा व्यक्त कर तांगे को दिये जाने वाले चार आने बचा लिये। इस व्यय को आपने अपव्यय की संज्ञा दी थी। देश–विदेश में प्रसिद्ध एवं केन्द्रीय असेम्बली (संसद) के सदस्य भाई परमानन्द जी का यह व्यवहार आदर्श एवं प्रेरणादायक व्यवहार था।

भाई परमानन्द जी इतिहासवेत्ता भी थे। बीसवीं सदी के आरम्भ में आप इंग्लैण्ड गये। वहां से इंग्लैण्ड के लोगों की अपने इतिहास के प्रति प्रेम व उसकी रक्षा की प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हुए तथा भारतीयों की अपने इतिहास की उपेक्षा के उदाहरण देते हुए आपने एक विस्तृत पत्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी को लिखा था––''हम कहते हैं कि राजस्थान का कण–कण रक्त–रंजित है। क्या विदेशियों से जूझते हुए बलिदान देने वाले राजस्थानी वीरों व वीरांगनाओं का इतिहास सुरक्षित करने की हमें चिन्ता है?'' यह प्रश्न स्वामी जी ने अपने पत्र ''सद्धर्म प्रचारक" में प्रकाशित किया था। उनके एक जीवनी लेखक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने इस पर व्यंग करते हुए लिखा है कि "दिल्ली में जहां लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वालों को फांसी का दण्ड दिया गया था, उसी स्थान पर आज मौलाना आजाद के नाम पर मैडीकल कालेज है। यह है हमारी इतिहास की रूचि।"

सन् 1928 में लाला लाजपतराय के बलिदान के बाद पंजाब में कांग्रेस के पास उनकी जैसी छवि वाला कोई नेता नहीं था। कांग्रेस के एक शिष्ट मण्डल ने भाई परमानन्द जी से पंजाब में कांग्रेस की बागडोर सम्भालने का अनुरोध किया। भाई जी ने मुस्लिम तुष्टिकरण की कांग्रेस की नीति के कारण अपनी असमर्थता व्यक्त की। शिष्ट मण्डल ने लाला लाजपतराय जी की अर्थी में शामिल भारी भीड़ और उन्हें मिले सम्मान का जिक्र किया और कहा कि आप तो देश की आजादी के लिए कालापानी की सजा काट चुके हैं। देश की जनता में आपके लिए बहुत आदर है, इसलिए आप नेतृत्व करें। इस पर भाई जी ने अपनी स्वाभाविक स्पष्टवादिता की शैली में कहा––''भले ही मेरी अर्थी को कंधा देने वाले चार व्यक्ति भी न आयें, मेरे मरने पर कोई एक आंसू भी न टपकाये, परन्तु मैं अपने सिद्धान्त छोड़कर कांग्रेस में नहीं आ सकता।"

मई, 1906 में भाई परमानन्द मुम्बई से जलमार्ग से अफ्रीका महाद्वीप में वैदिकधर्म प्रचारार्थ गये। मार्ग में आपको अनेक कष्ट हुए। एक दिन अफ्रीका में भ्रमण करते हुए आप हब्शियों की बस्ती में जा पहुंचें। वहां एक पुत्री के घर से शहद चुराने के कारण क्रोधित एक मां ने उस चोर कन्या को पेड़ से बांध कर जलाने का प्रयास किया परन्तु अन्तिम क्षणों में कुछ सोच कर उसे वहां छोड़ कर जाना पड़ा। परमानन्द जी जब वहां पहुंचे तो उस कन्या की दशा को देखकर द्रवित हो गये और उसकी सहायता से स्वयं को वहां बांध कर कन्या को वहां से दूर भेज दिया और स्वयं जलने के लिए तैयार हो गये। बस्ती के एक हब्शी ने बाहर आकर जब यह देखा तो अपने साथियों को बुलाया। कन्या की मां ने आकर घटना का सारा वर्णन कह सुनाया। इस घटना से वहां के सभी हब्शी भाई परमानन्द जी के व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्हें उच्च आसन पर बैठा कर उनका सम्मान किया और स्मृति चिन्ह के रूप में उन्हें हाथी दांत से बनी वस्तु देकर विदा किया। उनके एक भक्त श्री विलियम उन्हें ढूंढ़ते हुए वहां आ पहुंचे तो यह दृश्य देखकर हतप्रभ रह गये। बाद में भाई जी को कालापानी भेजे जाने से श्री विलियम बहुत दुःखी हुए थे और भाईजी के मानवोपकार के कार्यो से प्रभावित होकर उन्होंने आर्यधर्म की दीक्षा ली। अफ्रीका में भाई परमानन्द ने मोम्बासा, डर्बन, जोहन्सबर्ग तथा नैरोबी आदि अनेक स्थानों पर प्रचार किया।

डर्बन में एक अवसर पर गांधी जी और भाई परमानन्द जी परस्पर मिले। एक सभा जिसमें भाई परमानन्द जी का व्याख्यान हुआ, उसकी अध्यक्षता गांधी जी ने की थी। भाई जी के जोहन्सबर्ग पहुंचने पर गांधी जी उन्हें अपने निवास पर ले गये थे और श्रद्धावश उनका बिस्तर अपने कंधों पर उठा लिया था। गांधी जी के निवास पर भाई जी एक माह तक रहे भी थे।

डी.ए.वी. कालेज कमेटी की ओर से भाई जी को अध्ययन के लिए लन्दन भेजा गया था परन्तु वह वहां भारत की आजादी के दीवानों से ही मिलते रहे। आपने वहां सन् 1857 की भारत की आजादी की प्रथम लड़ाई के इतिहास पर पुस्तकें एकत्र की और बिना कोई डिग्री लिए पुस्तकें लेकर भारत लौंटे। आपने सारी पुस्तकें डी.ए.वी. कालेज के संस्थापक महात्मा हंसराज जी को सौंप दी जिन्हें महात्मा जी ने अपनी अलमारियों में रख लिया। आर्यसमाज के महान नेता रक्त साक्षी पं. लेखराम के अनुसार भाई परमानन्द जी ऐसे निर्भीक एवं साहसी पुरुष थे जिनमें भय वाली रग थी ही नहीं। वे प्राणों के निर्मोही थे। लाहौर में एक बार बड़ा भारी साम्प्रदायिक दंगा हुआ। भाई जी तथा आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान पं. चमूपति का घर वहां असुरक्षित था परन्तु इन दोनों आर्य महापुरूषों को अपनी व अपने परिवारों की कोई चिन्ता नहीं थी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने वहां आर्य विद्वान व नेता पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती को दो युवकों के साथ भेजकर उनके समाचार मंगाये थे।

भाई जी ने जोधपुर में महाराजा जसवन्त सिंह के अनुज महाराज कुंवर प्रताप सिंह के निमन्त्रण पर राजकुमारों की शिक्षा के लिए स्थापित स्कूल में एक वर्ष एक पढ़ाने का कार्य किया। श्री प्रतापसिंह की अंग्रेजों की भक्ति एवं राजदरबार में दलबन्दी के कारण खिन्न होकर रातों–राज वह वहां से चल पड़े थे। जब लाहौर में आर्य साहित्य के प्रकाशक महाशय राजपाल जी की कुछ विधर्मियों ने हत्या कराई तो सरकार ने उनके शव की मांग करने वालों को बेरहमी से पीटा। आप भी पुलिस की लाठियों के प्रहारों का शिकार बने। यदि वहां कुछ आर्ययुवक आपको न बचाते तो कोई अनहोनी हो जाती। भाईजी एक सिद्ध हस्त लेखक भी थे। इतिहास आपका प्रिय विषय था। 'भारत का इतिहास' आपके द्वारा लिखी गई एक पुस्तक है जिसे न्यायालय में आपके विरुद्ध प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर अंग्रेज सरकार के सरकारी वकील ने कहा था कि यह पुस्तक विद्रोह की प्रेरणा देती है।

(शेष अगले अंक में)

भारतीय शुद्धि सभा ने किया दानवीर श्री आनन्द चौहान व डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन

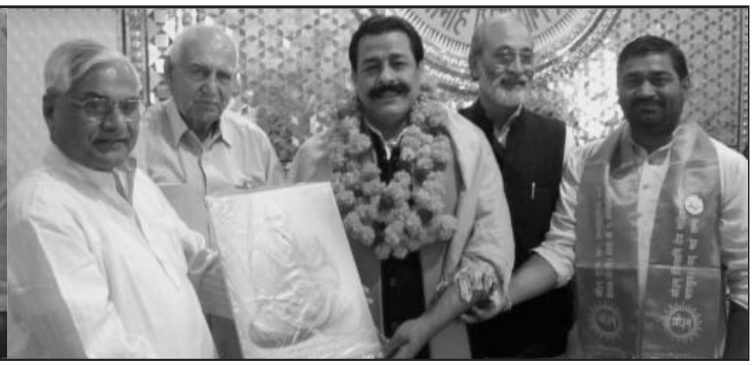

रविवार, 1 नवम्बर 2015, अखिल भारतीय शुद्धि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज, सैक्टर–9, आर.के.पुरम,नई दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया, चित्र में श्री आनन्द चौहान को सम्मानित करते श्री रामनाथ सहगल, श्री हरबंसलाल कोहली, नरेन्द्र वलेचा, डा.अनिल आर्य, रविन्द्र मेहता व श्री अजय सहगल। द्वितीय चित्र में डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते श्री रविदेव गुप्ता (प्रधान, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल), श्री हरबंसलाल कोहली, कै. अशोक गुलाटी व श्री प्रकाशवीर शास्त्री।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी व स्वामी दिव्यानन्द जी की स्मारिका का विमोचन सम्पन्न

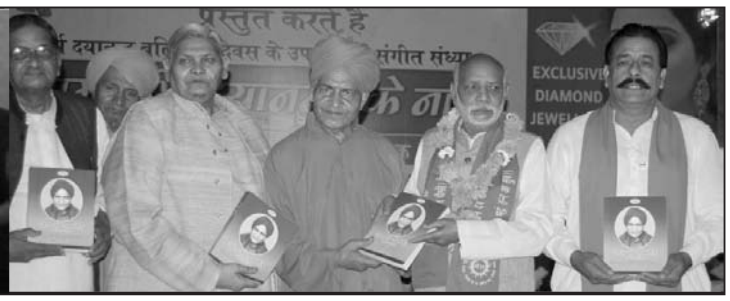

साहित्यकार डा. सुन्दरलाल कथुरिया रचित स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी ''शून्य से शिखर तक'' के अग्रेजी संस्करण का विमोचन करते शिक्षाविद् श्री आनन्द चौहान व श्रीमती मृदुला चौहान। उल्लेखनीय है कि परिषद् द्वारा प्रकाशित हिन्दी संस्करण का विमोचन श्रीमती शीला दीक्षित कर चुकी हैं।

द्वितीय चित्र–स्वामी दिव्यानन्द जी के अमृत महोत्सव की स्मारिका का विमोचन करते ठाकुर विकम सिंह जी साथ में आचार्य प्रेम पाल शास्त्री व डॉ.अनिल आर्य।

←मॉरिशस के प्रधानमन्त्री का अभिनन्दन

मॉरिशस के प्रधानमन्त्री श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ को चित्र भेंट करते डॉ. अनिल आर्य व सत्येन्द्र मोहन कुमार। साथ में श्री रमेश पोखरियाल निशंक (पूर्व मुख्यमन्त्री उत्तराखण्ड) व कप्तान सिंह सोलंकी गर्वनर, हरियाणा

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 5, 6, 7 फरवरी 2016 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थानः अजमल खाँ पार्क, करोलबाग, नई दिल्ली–110005

विराट् शोभा यात्राः शुक्रवार 5 फरवरी 2016, प्रातः 10:30 बजे

रूटः अजमलखाँ पार्क से चलकर फैज रोड, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, डोरीवालान, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, आर्य समाज रोड, करोल बाग, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग होते हुए अजमल खाँ पार्क में दोपहर 1:30 बजे समापन।

मुख्य आकर्षण

* आर्य युवा सम्मेलन
* वेद सम्मेलन
* शिक्षा–संस्कृति रक्षा सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* नारी शक्ति सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 3 जनवरी 2016 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्कः श्री आदर्श कुमार–9811440502, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री–9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 3 जनवरी 2016 तक गोपाल जैन–9810756571, कमल आर्य–9953995003, ऋषिपाल शास्त्री–9891148729, अरुण आर्य–9818530543, जयप्रकाश शास्त्री–9810897878 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि–लंगर के लिए आटा, दाल,

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली–110007, मो. 9868661680
E-mail: aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर उन्हें नयी कार भेंट करने का संकल्प

शनिवार, 14 नवम्बर 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डा. अनिल आर्य का 57 वां जन्मोत्सव परिषद् कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में सोल्लास मनाया गया। शुभ चिन्तकों ने पहुंच कर अपनी शुभकामनायें प्रदान की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य जगत की ओर से शुभकामनायें देते हुए कहा कि जो कार आर्य जनता ने 6 वर्ष पूर्व भेंट की थी वह बदलने की आवश्यकता है तथा सर्वसम्मति से सभी ने परिषद् अध्यक्ष को नयी कार भेंट करने का संकल्प व्यक्त किया। स्वामी आर्य वेश जी ने सर्वप्रथम 11,000 रू,महेन्द्र भाई ने 11,000 रू, वेदप्रकाश आर्य ने 21,000 रू,रामकुमार सिंह ने 11,000 रू सहयोग देने का आशवासन दिया। श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि जो कमी रह जायेगी वह पूरी कर देंगे। उपरोक्त चित्र में डा.अनिल आर्य व प्रवीन आर्या को बधाई देते हुए सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी,श्री सुरेन्द्र कोहली,स्वामी आर्य वेश जी व महेन्द्र भाई जी। सभी के लिये प्रतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

गुरूकुल पूठ हापुड़ की रजत जयन्ती पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

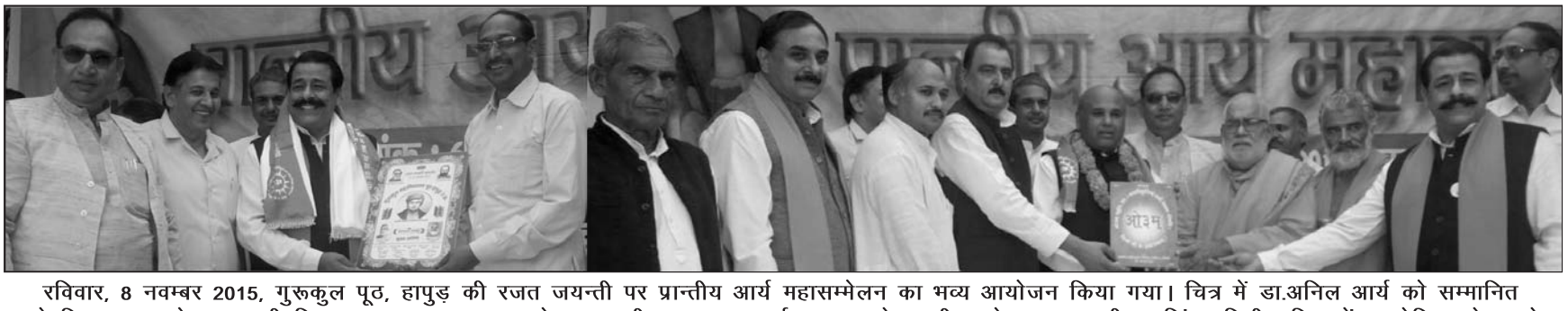

रविवार, 8 नवम्बर 2015, गुरूकुल पूठ, हापुड़ की रजत जयन्ती पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। चित्र में डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते जिला सभा के प्रधान श्री विकास अग्रवाल, गुरूकुल के प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य व सभा के प्रान्तीय कोषाध्यक्ष डा.धीरज सिंह। द्वितीय चित्र में– अमेरिका से पधारे वैदिक विद्वान डा.सतीश प्रकाश जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी,उ.प्र.प्रान्तीय सभा प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा,आचार्य धनजंय जी व दिल्ली से श्री रामकुमार सिंह आर्य आदि।

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये बैठकों की श्रृंखला जारी

दिल्ली में होने वाले दिनांक 5,6,7 फरवरी 2016 के आर्य महासम्मेलन व 251 कुण्डीय यज्ञ की तैयारी के लिये आर्य जनता में उत्साह की लहर अभी से चलनी शुरू हो गयी है। पश्चिमी दिल्ली की बैठक श्री रवि चडडा की अध्यक्षता में आर्य समाज,रमेश नगर, दिल्ली,उतर पश्चिमी दिल्ली की श्री कृष्णचन्द पाहुजा की अध्यक्षता में आर्य समाज प्रशान्त विहार,दिल्ली में,गाजियाबाद की बैठक श्री सुभाष सिंघल की अध्यक्ष्ता में गुरूकुल गाजियाबाद में व फरीदाबाद की बैठक माता विमला ग्रोवर की अध्यक्षता में आर्य समाज,सैक्टर–19,फरीदाबाद में पूर्वी दिल्ली की बैठक श्री यशोवीर आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज,सूर्य निकेतन,दिल्ली में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गयी । सभी आर्यो ने सम्मेलन को पूर्ण सहयोग से सफल बनाने का आश्वासन दिया है।

आर्य माँ कृष्णा रहेजा का 8वां स्मृति दिवस सैनिक फार्म में सोल्लास सम्पन्न

4 नवम्बर 2015, आर्य महिला सभा की पूर्व उपप्रधाना आर्य नेत्री श्रीमती कृष्णा रहेजा का 8 वां स्मृति दिवस आर्य समाज, सैनिक फार्मस,नई दिल्ली में सोल्लास मनाया गया। स्वामी विजयवेश, स्वामी मुक्तानन्द, ठाकुर विक्रम सिंह के प्रवचन हुए। श्री अंकित उपाध्याय के मधुर भजन हुए। डा.अनिल आर्य ने माता जी के संस्मरण सुनाते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। श्री विरेश रहेजा,श्री नवीन रहेजा,श्री सुरेश रहेजा,डा.सुनील रहेजा,श्रीमती अन्जली मेहता, श्रीमती निर्मल रहेजा,किरण रहेजा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। सुन्दर प्रीतिभोज का आनन्द लेकर सभी विदा हुए। श्री कन्हैयालाल आर्य ने संचालन किया । संजना राणा व सना ने व्यवस्था सम्भाली।

दानी महानुभावों से अपील

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. **10205148690** स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868002130** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464.

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. हीरो मोटो कोर्प के चेयरमैन, धर्मनिष्ठ उद्योगपति श्री बृजमोहनलाल मुन्जाल का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
2. श्री ओमप्रकाश चोपड़ा (रोहतास नगर) का निधन हो गया।
3. श्री बाबुलाल शर्मा (नवीन शाहदरा) का निधन हो गया।
4. माता कैलाशवती आनन्द (रानी बाग) का निधन हो गया।
5. श्री सोमदेव आर्य (भजनोपदेशक) बुलंदशहर का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970